शिद्धान्ततत्वोपदेशाष्टक ।

छन्द ।

श्रीगुरु चरण सरोज मधुप इव होउ न रञ्च भुलाया कर । बिषय भोग तजि तुच्छ जानि जिय नित नव नेह बढ़ाया कर ॥ भजन सार जग झूठ शोक प्रद यह मन को समुझाया कर । प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनाया कर ॥ १ ॥ प्रभु अर्पण करि रूखा सूखा एक बार दिन पाया कर । देखि नारि पर बिभव भोग सुख सपनेउ चित न डुलायाकर ॥ श्रीगुरु प्रद सम्बन्ध भावना तिसमें मनहिं लगाया कर । प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनाया कर ॥ २ ॥ पिया मिलन की चाह हमेशे छणछण नई उठाया कर । गहु गुण सबके परि हरि अवगुण उर प्रभु रूप बसाया कर ॥ गुरु सेवा करि सन्त सङ्ग शुचि मन चित बुद्धि थिराया कर । प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनाया कर ॥ ३ ॥ हरषि हिये सुनि पर सु प्रसंशा निज गुण

सुनि सकुचायाकर। मन मुखता छल कपट दूरि करि गुरु गोबिंद मन भायाकर ॥ राग रोष मद मानशोक भय चिन्ता चाह घटायाकर। प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनायाकर ॥ ४ ॥ प्रमुदित रहु हरहाल हमेशे रटत न नाम अघायाकर। लल-कि ललकिलय लाय उचारि सु नामहिं हिय हरषा-याकर ॥ समय समय रुख पाय जात गुरु निकट न उर सरमायाकर। प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटिरटि नाम सुनायाकर॥५॥ रस मय बिबिधि पदारथ मायिक इन्द्रिनि बहु न खवायाकर। निज सुख स्वारथ लागि मोह बश होइ न दश दिशि धायाकर ॥ सुर दुर्लभ मानुष तनु लहि प्रिय स्वाँस न व्यर्थ बितायाकर। प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुना-याकर ॥६॥ बाद बिबाद स्वाद तजि भजि हरि तरि भव शिन्धु सु दाया कर। नित नव श्री सिय राम नाम में मन बानी पर कायाकर ॥ देह खेह सम जानि भूलि जनि मलि मलि बहु न नहायाकर। प्रेमलत-

हि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनायाकर॥७॥
गर्भ कौल करि याद नाम सन नित नव नेह सजायाकर। मनके कुटिल करार अनेकनि रटि सियराम उड़ायाकर॥ सावधान रहुमन मतङ्ग के धोखों में जनि आयाकर। प्रेमलतहि खुश किया चहै तौ रटि रटि नाम सुनयाकर॥ ८॥

इति श्री सिद्धान्त तत्वोपदेशाष्टक समाप्त शुभम्॥

श्री मिथिला माहात्म्य।

* कुण्डलिया *

कञ्चन बन रञ्च न रहै, घोर घाम भव ताप।
निरबन्धन निबहत जहाँ, सीताराम सु जाप॥
सीताराम सु जाप, उपाधो एकौ नाहीं।
निर्मल सरि सर बाग, दिव्य श्रीमिथिला माहीं॥
सब विधि सुख की खानि, सकल कलिकाल बिध्वंसन।
सिय जू जन्म सु भूमि, परम पावन बन कञ्चन॥१॥

पावन को पावन करैं, श्री मिथिला पुर धाम ।
बिहरत सीताराम जहँ, प्रण करि आठो याम ॥
प्रण करि आठो याम, जपत सिय प्यारी प्यारी ।
परिकर भाइन सहित, रमैं पीतम ससुरारी ॥
कबहुँक आवहिं अवध, जाइ गुरुसेन सु धावन ।
तुरतहिं लावहिं बोलि, दिव्य मिथिला पुर पावन ॥२॥
मिथिला बासी दिव्य तर, सिय जू के प्रिय प्राण ।
राम रूप ताते कहे, बिष्णू आदि पुराण ॥
बिष्णू आदि पुराण, राम सिय प्राण बखानी ।
दोउन के मन हरैं, धन्य मिथिला महरानी ॥
सरिता सर बन बाग, विपुल निरखत मन जितिला ।
सब नाते परि त्यागि, बसें पिय प्यारी मिथिला ॥३॥
मिथिला नाम सु ग्राम के, नाते श्री सिय राम ।
अपनै हैं विश्वास दृढ़, मम उर आठो याम ॥
मम उर आठो याम, छमहिं अघ अवगुण मेरे ।
गुरुपद लखि सम्बन्ध, राखि हैं प्रभु निज नेरे ॥
दीन बंधु नत पाल, पालिहैं करि दुख शिथिला ।

प्रेमलता यह जानि, नाम रटि सेइय मिथिला ॥ ४ ॥
मिथिला की सरवर नहीं, सप्त पुरी चहुँ धाम ।
प्रगट भई जहँ आइ सिय, अखिल लोक विश्राम ॥
अखिल लोक विश्राम, राम की प्राण सजीवनि ।
जेहि बिनु व्याकुल होत, पाय जेहि होत पाम धनि ॥
मन बाणी गुण पार, राम अति अजित सु जितिला ।
प्रेमलता सोइ सीय कीन्ह, निज बस श्री मिथिला ॥५॥
मिथिला बसि जग आश तजि, रटु सिय राम सु नाम ।
श्रीगुरु मूरति राखि उर, मन परि पूरण काम ॥
मन परि पूरण काम, राम करुणा सुख सागर ।
मिलिहैं बिनहिं प्रयास, सीय नाते मति नागर ॥
बीते अमित सु जन्म, करत बहु साधन निथिला ।
प्रेमलता चित चेति निवसि, अब सिय पुर मिथिला ॥६॥
सीता जन्म सु भूमि, अरु रघुनन्दन ससुरारि ।
उभय भांति आनन्द प्रद, मिथिला पुरी बिचारि ॥
मिथिला पुरी बिचारि, युगल उर अति सय प्यारी ।
परम रम्य मन हरण, सुखद महि न्यारी न्यारी ॥

सरिता सर आराम, विपुल सब परम पुनीता ।
प्रेमलता शुचि संत बसहिं, बहु सुमिरि सु सीता ॥७॥
सीता रामहिं यदपि प्रिय, मिथिला अवध सु धाम ।
तद्यपि मिथिला अधिक पिय, दम्पति मन अभिराम ॥
दम्पति मन अभिराम, अलौकिक रचना पावन ।
मङ्गल मय सब भांति, भरी ऐश्वर्य सुहावन ॥
कलि मल संशय शोक, हरणि पद प्रेम प्रतीता ।
प्रेमलता अस जानि, निवसि नित ध्याव सु सीता ॥८॥
सीता रामहिं मिलन जो, चाहै बिनु श्रम कोय ।
सो वसि मिथिला मारि मन, रटै नाम दृढ़ होय ॥
रटै नाम दृढ़ होय, तजै कुल कानि बड़ाई ।
नाना व्रत व्योहार, शुभाशुभ गुण चतुराई ॥
गुरु मूरति हिय धारि, सदा रस एक अभीता ।
प्रेमलता तजि आश, सेउ मिथिला रटि सीता ९॥
कमलादिक शुचि सरित बहु, हरणि घोर त्रय ताप ।
सीता सर आदिक अमित, सर सागर निष्पाप ॥
सर सागर निष्पाप, वाटिका बाग सुहावन ।

बसहिं लोग धर्मज्ञ, जपहिं सिय राम सुपावन ॥
ज्ञान बिचार बिबेक, भक्ति उर फुरहिं सु अमला।
प्रेमलता बसिमुदित, सुमिरि सिय मज्जिसुकमला॥१०॥
जगमें तीरथ धाम जे, अवध समान न एक।
मिथिला सरिस न अवध सो, जानहिं बिमलबिबेक॥
जानहिं बिमल विवेक, यहाँ नहिं हठ को कामा।
परब्रह्म श्रीराम, भये लखि चकित सुधामा॥
सिय बिभूति ऐश्वर्य, अकथ गुण महिमा अगमें।
प्रेमलता यह रहस गुप्त, अति प्रगट न जग में॥११॥
मिथिला तू बड़ भागिनी, कवन पुन्य तप कीन।
जगत जननि सिय प्रगटि जहँ, विपुलबड़ाई दीन॥
बिपुल बड़ाई दीन, कहहिं सुरनर मुनि धनि धनि।
सकल तीर्थ शुचि धाम, पुरिनि की भई सिरोमनि॥
देश भयो महि तिलक, निरखिरामहुँ भये सिथिला।
प्रेमलता त्रय लोक्य पूज्य, पावनि तू मिथिला॥१२॥
साधू सतयुग ऋषि रहे, त्रेता बानर भालु।
द्वापर गोपी ग्वाल सोइ, कलि बैष्णव जन पालु॥

कलि बैष्णव जन पालु, भये सियबर अनुरागी।
तिलक छाप गर माल, धारि जग आशा त्यागी॥
कोउ तापस कोउ रसिक भक्त, कोउ ज्ञान अगाधू।
प्रेमलता सु अनादि, नाम सिय रामसु साधू॥ १३॥

इति श्री मिथिला माहात्म्य कुण्डलिया श्री
बैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री
१०८ श्री सियालाल शरण जी
महाराज कृत समाप्तम्।

॥ जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम॥
॥ जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम॥
॥ जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम॥

आपका,—सिया रघुनाथ शरण।

श्रीस्वामी श्रीमियालालशरणजीमहाराज

सियारघुनाथ शरण कृत सवैया ।

श्री–सियस्वामिनिकेरिसखीरसएकमदाबयवर्षइगारा ।
स्वा–मिनिआयसुधारिहियेश्रीप्रेमलताजगमें अवतारा
मी–तसबैप्रियप्राण समानसुजानअमानमहानउदारा ।
श्री–सियरामसुनामउपासकआशकअश्रुरटैंनिशिवारा
सि–द्धप्रसिद्धतपीगुणवन्तछमीसुदमीरुअकामअगेही
या–दसदानिजनामस्वरूपइकन्दनिवासदशासुबिदेही
ला–जबिहायकरैंनिजकाजहिनामरटैंशुचि सन्तशनेही
ल–क्षणजोशुठि सन्तनकेसुबसैं इन्हमाहिंनजानतकेही
श–रणागतपालकज्योंपितुबालकदेहिंसुबुद्धिकुबुद्धिनशाई
र–टवावहिंनामबसावहिंधामहट्यावहिंकाम कलङ्क कषाई
न–वषष्टदशाष्टरुचारिकेसाथ्युगोंकेसुधर्महिं देहिंलखाई
जी–व सुकौल गुरूकेसुवाक्यबिचारिकरैंनित नाम रटाई
म–हिमातिन्हकीकहुकौनकहैजिन्हनाम रसामृतपानकिया
हा–रहिं शेष गणेश महेशसु सारद नारद आदि हिया
रा–महिंभक्तविशेषकह्योजिन्हिनाममहामणिधारिलिया
ज–गधन्यसु'मंजरिप्रेम'वहीअसनामिनिचर्णजुधोइपिया।